International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN -2250-253X, (Print), E-ISSN 2320-544X, ISSUED-9, VOL-I, Sept,2013

शोध पत्र-गृहविज्ञान

रंगाई, छपाई कला में संश्लिष्ट रंगों का बढता उपयोग (भैरवगढ के विशेष संदर्भ में)

* डॉ. मधुबाला वर्मा ** कु. अंकिता फौजदार

* प्राध्यापक गृहविज्ञान, शासकीय गीताजंली , पी.जी. महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

** शोध छात्रा, गृहविज्ञान संकाय बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

सारांश :– वर्तमान अध्ययन भैरवगढ में कार्यरत रंगाई छपाई कारीगरों द्वारा बढता संश्लिष्ट रंगों के प्रयोग का कारण जानने के लिए किया गया। अध्ययन हेतु 30 रंगाई छपाई कारीगरों का चयन किया गया। इनके लिए साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया। रंगाई छपाई कारीगरों का साक्षात्कार करके तथ्य एकत्रित किए गए। तथ्यों का अध्ययन तथा विवेचना करके ज्ञात हुआ कि रंगाई व छपाई कार्य में प्राकृतिक रंगों की जगह संश्लिष्ट रंगो ने ले ली है जिसका मुख्य कारण संश्लिष्ट रंगो का सस्ता होना , सरंलिष्ट रंगों को तैयार करने मे कम समय का लगना संश्लिष्ट रंगों की सरलता से उपलब्ध होना , बाजार में बढती प्रतिस्पर्धा की मांग के कारण प्राकृतिक रंग (शेड़स) भी अधिक नहीं बनते व प्राकृतिक रंग में पम्केपन की कमी होती है।सरंलिष्ट रंगों का प्रयोग अधिक होने लगा है

प्रस्तावना:–

मध्यप्रदेश अपनी आकर्षक रंगाई छपाई के लिए प्रसिद्ध है जिसमें उज्जैन का भाग भैरवगढ नामक स्थान है जहां परम्परागत रूप से रंगाई छपाई का कार्य पीढी दर पीढी चला आ रहा है प्राचीन काल में भी भैरवगढ की वस्त्र छपाई रंगाई कला अपनी विलक्षणता तथा विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध रही है । इन वस्त्रों में जादुई आकर्षण होता था। जो इसके सौदंर्य गौरव और विशिष्टता का अहसास दिलाते थे तथा यूरोप एवं पश्चिमी एशिया के देशों में निर्यात किए जाते थे ।

भैरवगढ में प्रमुख रूप से मुस्लिम छीपा तथा ब्राहम्ण जाति के लोग निवास करते है लगभग 400 वर्ष पूर्व राजस्थान तथा गुजरात से छीपा यहा आकर बस गए थे छीपा अपने साथ रंगाई व छपाई की कला लेते आए थे। भैरवगढ में छीपाओं के लगभग 300 परिवार रहते है जिनमें से लगभग 100 परिवार में रंगाई छपाई का कार्य होता है भैरवगढ की प्राचीन रंगाई छपाई वस्त्रो में लंगुग, जाजम, ओढनी तथा रजाई प्रसिद्ध थे। प्राचीन काल मे वस्त्रो की रंगाई हेतु प्राकृतिक वनस्पति रंगों का प्रयोग किया जाता था। छीपा स्वयं ही कच्चा माल एकत्रित करके उनसे रंग तैयार करते थे रंग तैयार करने की इस विधि मे काफी समय लगता था।

प्राकृतिक रंगों से तैयार वस्त्र आंखों को सुकुन व ठंडक प्रदान करने वाले होते है। भैरवगढ में ब्रिटिश काल की अंत की शताब्दी में परंपरागत छपाई में बदलाव आना प्रारंभ हुआ और वनस्पति रंगों की बजाये रासायनिक रंगों का प्रयोग होना प्रांरभ हो गया था। भैरवगढ की रंगाई व छपाई कला में मुख्य रूप से काला रंग व लाल रंग का प्रयोग होता है।प्राकृतिक रंग बनाने में समय व मेहनत बहुत अधिक लगती है जैसे नीला रंग तैयार करने में

150 ग्राम – ईडीगों पाउडर
300 ग्राम – हीरा कसीस
600 ग्राम – कटनी चूना

को 20 लीटर पानी में मिला कर 6 दिन तक रखते है इसके पश्चात् कपडे का इन से रंगा जाता है प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करने से छपाई रंगाई कारीगरों का उत्पादन की मात्रा कम हो जाती है। तथा मुनाफा भी कम होने के कारण संश्लिष्ट रंगों का प्रयोग बढ गया है प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करने सी तैयार माल मंहगा हो जाता है जिसे बाजार में बेचना कठिन होता है। दूसरी ओर येह युग मशीनीकरण युग है नित नए उपकरण का विधि का अविष्कार हो रहा है इसलिए हर शिल्पी यह चाहता है कि उत्पादन बढाए इसलिए वह ऐसे तरीकों की तलाश मे रहता है जो उत्पादन बढा सके।

प्राकृतिक रंगों को नजर अंदाज कर रसायनिक रंगों का प्रयोग कर हानिकारक प्रभाव से नहीं बच सकता। रसायनिक रंग कारीगरों के शरीर पर दुष्प्रभाव पैदा करते है जैसे आंखों में जलन , सांस की गंभीर बीमारी , त्वचा संबंधी रोग इत्यादि साथ ही साथ रसायनिक रंगों के प्रयोग से पर्यावरण भी प्रदूषित हो रहा है संश्लिष्ट रंग का प्रयोग कर शिल्पी अपनी पंरपरागत कला को लुप्त करता जा रहा है जो कि शिल्पी की पहचान थी।

साहित्य पुनरावलोकन :–

कुदेशिया ररमि के शोध के अनुसार '' छपाई रंगाई कला अब लुप्त होती जा रही है कुछ पुराने छीपे इस कला को जीवित रखे हुए है लेकिन उनकी संताने इस कार्य को आगे नहीं बढाना चाहती है वह ऐसा कार्य करना चाहती है जिससे अधिक से अधिक धन अर्जित किया जा सके । पहले प्राकृतिक रंगों से छपाई रंगाई का कार्य होता था। लेकिन कई समस्याओं के कारण प्राकृतिक रंगों का प्रयोग बंद सा हो गया है।

साक्षात्कार के अनुसार:–

गुट्टी रहीम के अनुसार ''वनस्पति रंगों के बजाये केमिकल (रासायनिक रंगों) का प्रयोग होना प्रांरभ हो गया इसका नतीजा यह हुआ कि शिल्पियों द्वारा रासायनिक रंगो का प्रयोग इतना किया जाने लगा कि वनस्पति रंगों का प्रयोग बंद सा हो गया है वर्तमान में इन रंगों का प्रयोग इने गिने शिल्पियों

द्वारा किया जा रहा है।

उद्देश्य :– रंगाई छपाई कला में संश्लिष्ट रंगों का बढता उपयोग का अध्ययन ।
(भैरवगढ के विशेष संदर्भ में)

न्यादर्श :– न्यादर्श के रूप में भैरवगढ की विभिन्न रंगाई छपाई कारखाने में कार्यरत 30 कारीगरों का दैव निदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया।

उपकरण व विधी :– रंगाई छपाई ने कार्यरत 30 छीपाओं का देव निदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया । चयनित छीपाओं का साक्षात्कार करके तथ्य एकत्रित किए गए । एवं तथ्यों से प्राप्त आंकडों का फलांकन किया गया। एवं मास्टर शीट तैयार की गई एवं प्राप्त आंकडों का विशलेषण प्रतिशत विधि द्वारा कर परिणाम प्राप्त किए गये।

तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण इस प्रकार है :–

आंकडो से प्राप्त जानकारी के अनुसार 3.33 प्रतिशत रंगाई छपाई कारीगरों द्वारा प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जा रहा है तथा 96.66 प्रतिशत रंगाई छपाई कारीगरों द्वारा संश्लिष्ट रंगों का प्रयोग किया जा रहा है।

संश्लिष्ट रंगों का बढता उपयोग :–

सरंलिष्ट रंगों का बढता उपयोग का कारण में 96.6 प्रतिशत रंगाई, छपाई कारीगरों का मानना है कि सरंलिष्ट रंगों का कम मूल्य होना, 100 प्रतिशत रंगाई छपाई कारीगर मानते है कि सरंलिष्ट रंगों द्वारा समय की बचत व सरलतम अवधि है। वहीं 93.3 प्रतिशत रंगाई छपाई कारीगर कहते है प्राकृतिक रंगों की पूर्ण जानकारी का अभाव बडती प्रतिस्पर्धा व सरलतम कच्चे माल की उपलब्धता है

निष्कर्षः–

प्राप्त आंकडे से पता चलता है कि छपाई रंगाई

क्रं.	*संश्लिष्ट रंगों का बढता उपयोग का कारण*	*संख्या*	*प्रतिशत*
1	रंग का कम मूल्य	29	96.6%
2	सरलतम विधी	30	100%
3	समय की बचत	30	100%
4	कच्चे माल की सरल उपलब्धता	28	93.33%
5	प्राकृतिक रंगों की पूर्ण जानकारी का अभाव	28	93.33%
6	बाजार की प्रतिस्पर्धा	28	93.33%

कारीगरों द्वार संश्लिष्ट रंगों का उपयोग का कारण आज के कम्प्यूटर युग मे वक्त की धूल इस पर जम गई है । बदलते वक्त मे रंग भी बदल गए है वनस्पति रंगों की जगह कृत्रिम रंगों (सरंलिष्ट रंग) ने लेली है। क्योकि बदलते समय के साथ छीपाओं को आधुनिक तकनीक तथा मशीनों से मुकाबला करना पड रहा है।

प्राकृतिक रंगों से रंगाई करने से मंहगा उत्पाद तैयार होता है व बाजार मे फैरान व मांग को देखते हुए कम मूल्य मे (संशलिष्ट रंगाई) द्वारा उत्पाद तैयार कर रहे है। भैरवगढ की युवा पीढी इस व्यवसाय में ज्याद ध्यान नहीं देती क्योकि इस व्यवसाय में मेहनत अधिक व मुनाफा मेहनत के अनुरूप नहीं है व प्राकृतिक व पूर्वजों द्वारा प्राकृतिक रंग तैयार करने का लिखित प्रमाण भी नहीं है।

भैरवगढ में मुख्यतः से धोती, लुगंडा, चुनरी, जाजम रजाई, खोत, प्राकृतिक रंगों से रंगाई की जाती थी लेकिन आज इनकी जगह चादर, गाउन, सलवार सूट, लुंगी ने ले ली है जो कि कृत्रिम रंगों से रंगाई की जाती है। जिसका मुख्य कारण रंगों का ठिकाऊपन है। प्राकृतिक रंगों संश्लिष्ट रंगों की तुलना में कम पम्के होते है। प्राकृतिक रंगों को बनाने मे समय अधिक लगता है जिस कारणवश कुछ ही छीपा प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर रहे है । जल्दी व सरलता पूर्वक संशलिष्ट रंगों से रंगाई व छपाई की जा सकती है जिस कारण से सिंशलिष्ट रंगों का उपयोग बढ गया है । प्राकृतिक रंग से रंगाई व छपाई भैरवगढ का प्राचीन तथा खूबसूरत हुनर जो कि समय के साथ–साथ बदलता जा रहा है

संदर्भ ग्रंथ

1. गुट्टी रहीम '' भैरवगढ की वस्त्र छपाई कला परम्परा से आधुनिकता तक''
2. कुदेशिया रश्मि –2004 – '' उज्जैन निर्मित वस्त्रो पर कलात्मक अंकन करने वो कुशल कारीगरों पर अध्ययन (भैरवगढ जेल के कैदी कारीगरों के संबंध में)